

आर्थिक भूगोल की परिभाषा एवं विषय-क्षेत्र [DEFINITION AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY]

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल की वह महत्वपूर्ण शाखा है, जिसके अन्तर्गत पृथ्वी के धरातल पर निवास करने वाले मानव की आर्थिक क्रियाओं और उनकी क्षेत्रीय भिन्नताओं और विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त मानवीय क्रियाओं के स्थानिक वितरण अर्थात् उनकी अवस्थितियों तथा सम्बन्धों का अध्ययन भी इसके अन्तर्गत किया जाता है।

इस विश्व का समाज, संस्कृति एवं सम्पूर्ण व्यवस्था में चाहे वह विकसित देशों की हो या विकासशील एवं स्वल्प विकसित देशों की, सभी में भौतिकवाद का गहराई तक प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है। इसी से अर्थतन्त्र, आर्थिक प्रक्रियाओं के विविध स्वरूपों एवं घटकों की महत्ता को समझा जा सकता है। यह सभी तथ्य वर्तमान में आर्थिक भूगोल से निकट से जुड़े हुए हैं। अतः "आर्थिक भूगोल, मानव के विविध आर्थिक क्रियाकलापों के बहुआयामी एवं पदानुक्रमी विकास से भूतल पर क्षेत्रों के मध्य ऐसे क्रियाकलापों के कारण मिलने वाली विविधताओं, विषमताओं एवं विभिन्नताओं का अध्ययन है।"

आर्थिक भूगोल की परिभाषाएँ (Definitions of Economic Geography)

कुछ प्रमुख भूगोलवत्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

आधुनिक आर्थिक भूगोल के जनक चिशोल्म के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सब भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन आता है, जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उनके विनिमय एवं स्थानान्तरण पर प्रभाव डालती हैं। आर्थिक भूगोल का महत्व इस बात में है, कि इसके द्वारा किसी प्रदेश के वाणिज्यिक (व्यावसायिक) विकास की दशा का ज्ञान हो जाता है और यह पता चलता है कि उस पर भौगोलिक दशाओं का क्या प्रभाव पड़ता है।"¹

प्रो. शॉ के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इन बातों का अध्ययन किया जाता है, कि किस प्रकार मानव की विभिन्न जीविकोपार्जन क्रियाएँ विश्व के उद्योगों, आधारभूत साधनों और औद्योगिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु किये गए विकास के अनुरूप होती हैं।"²

प्रो. जॉन्स और डार्कनवाल्ड के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव के उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन किया जाता है। वह इस बात का संकेत करता है, कि क्यों प्रदेश विशेषों में किसी वस्तु का उत्पादन और वहाँ से निर्यात होता है तथा क्यों अन्य प्रदेशों में इनका आयात एवं उपभोग किया जाता है।"³

अलेक्जेंडर जे. डब्ल्यू. के अनुसार, "आर्थिक भूगोल सम्पत्ति के उत्पादक, विनिमय तथा उपयोग से सम्बन्धित मानवीय क्रियाओं के (पृथ्वी के धरातल पर) स्वरूप में पाई जाने वाली क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।"⁴

1. "Economic Geography embraces all geographical conditions affecting the production, transport and exchange of commodities. Its chief use is to enable into form some reasonable estimate of the future course of commercial development, so far as that is governed by geographical conditions." —Chisholm : *Fundamentals of Economic Geography*.
2. "Economic Geography is concerned with problems of making a living, with World industries with basic resources and industrial commodities." —E. B. Shaw : *Economic Geography*.
3. "Economic Geography deals with the productive occupation and attempts to explain why certain regions are outstanding in the production and exploitation of various articles and why others are significant in the importation and utilisation of these products." —Prof. Johns & Darkenwald : *Economic Geography*.
4. "Economic Geography is the study of real variations on the Earth surface in man's activities related to producing, exchanging and consuming wealth." —Alexander, J. W. : *Economic Geography*.

मरफी (R. E. Murphy) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में मनुष्य के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानता एवं विषमता का अध्ययन किया जाता है।"¹

रूडॉल्फ वेटजिन्स (Rudolf Wetgens) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल विभिन्न प्रदेशों में पृथ्वी की संसाधनता तथा मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं की अन्योन्य क्रिया का अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी सार्थक परिणामों के वितरण की व्याख्या करता है।"

गाट्ज (Gotz) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में विश्व के विभिन्न भागों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"²

डॉ. हंटिंगटन के शब्दों में, "मानव व्यवसाय, मानव दक्षता तथा मानव की आवश्यकताओं (जैसे-कला, धर्म, प्रशासन, शिक्षा एवं सभ्यता) के अन्य पक्षों पर भौगोलिक वातावरण के प्रभाव की सीमा का अध्ययन आर्थिक भूगोल में किया जाता है।"

रूरबैक के अनुसार, "आर्थिक भूगोल एक क्षेत्र के आर्थिक जीवन का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत भौगोलिक वातावरण के नियन्त्रण या प्रभाव को आर्थिक जन-जीवन पर देखा जा सके।"

अतः उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है, कि आर्थिक भूगोल जीविकोपार्जन की विविध विधियों और उनकी समस्याओं से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें भूतल के आधारभूत संसाधनों और उनसे सम्बन्धित मानव-क्रियाओं के मध्य पड़े जाने वाले क्षेत्रवार व परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक भूगोल मानव द्वारा भूतल के प्राकृतिक संसाधनों के विविध प्रकार से विदोहन से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें उनके उत्पादन, परिवहन, वितरण और उपयोग का अध्ययन किया जाता है।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है, कि आर्थिक भूगोल शान्त व स्थिर अथवा मृत विज्ञान न होकर अन्य भौतिक विज्ञानों की भाँति गतिशील, विकासशील एवं गत्यात्मक (Dynamic) विज्ञान है।

आर्थिक भूगोल की प्रकृति एवं विषय-क्षेत्र

(NATURE AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

पूर्व में दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट है, कि आर्थिक भूगोल की प्रकृति विविध, बहुरूपी एवं व्यापक है। इसमें देश एवं काल के अनुसार क्षेत्रवार प्रत्येक बार निरन्तर परिवर्तन आते रहे हैं। इसमें संसाधन उपलब्धि के स्तर एवं उन पर निर्भरता के स्वरूप के अध्ययन का विशेष महत्व रहा है। इसी कारण आर्थिक भूगोल का विषय-क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव की आर्थिक क्रियाओं के वितरण की विवेचना, सम्बन्धित क्षेत्र के भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण के विभिन्न स्वरूपों को ध्यान में रखकर की जाती है। इसी आधार पर आर्थिक भूगोल के विषय-क्षेत्र को निम्नलिखित चार वर्गों में रखा जा सकता है—

- (i) किसी देश तथा उसके प्रदेशों की प्राकृतिक दशाएँ तथा प्राकृतिक संसाधन;
- (ii) मानवीय विशेषताओं के मानवीय घनत्व, वितरण आदि विविध पहलू;
- (iii) मानवीय संस्कृति, तकनीक तथा पूँजी;
- (iv) मानव की विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के स्थानिक वितरण का अध्ययन तथा उन पर प्राकृतिक संसाधनों तथा प्राकृतिक दशाओं का प्रभाव।